रीजॉइस लर्निंग सेंटर
लेखक: मिरियम लिवेल, रीजॉइस कॉर्पस क्रिस्टी, यूएसए
अनुवादक: प्रदीप मसीह, उत्तर भारत
www.rejoicecc.org

पाठ 7: आत्मिक वरदान

परिचय:

आत्मिक वरदान पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों को दिए जाते हैं ताकि कलीसिया की उन्नति हो और परमेश्वर के उद्देश्य की पूर्ति हो सके। आज हम विभिन्न आत्मिक वरदानों, उनके उद्देश्य, और उन्हें परमेश्वर की महिमा के लिए प्रभावी रूप से उपयोग करने के तरीकों को समझेंगे।

1. आत्मिक वरदान किसे मिलते हैं?
2. इन वरदानों का देने वाला कौन है?
3. बाइबिल में कौन-कौन से आत्मिक वरदानों का उल्लेख है?
4. क्या हमें यह चुनने का अधिकार है कि कौन सा वरदान हमें मिले?
5. हर एक वरदान महत्वपूर्ण है।
6. इन वरदानों का उद्देश्य क्या है?
7. परमेश्वर के सेवक भी देह (कलीसिया) के लिए एक वरदान हैं।
8. हमें सेवा कैसे करनी चाहिए? अपने वरदानों का उपयोग कैसे करना चाहिए?
9. आत्मिक वरदान दिए भी जा सकते हैं।
10. हमें अपने वरदानों का उपयोग करने की आज्ञा दी गई है।
11. अपने आत्मिक वरदान की खोज करना।

लक्ष्य: हम विभिन्न आत्मिक वरदानों को सीखें और प्रार्थना करके अपने वरदानों को पहचानें तथा उनका उपयोग करना सीखें।

1. आत्मिक वरदान किसे मिलते हैं?

1 कुरिन्थियों **12**
"अब हे भाइयों और बहनों, मैं आत्मा के वरदानों के विषय में तुम्हें अनजान नहीं रखना चाहता। तुम जानते हो कि जब तुम अन्यजाति थे, तब किसी न किसी रीति से गूंगे मूरतों की ओर खिंचते और बहकाए जाते थे। इसलिए मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि जो कोई परमेश्वर के आत्मा से बोलता है, वह यह नहीं कहता कि 'यीशु पर शाप हो,' और कोई भी 'यीशु प्रभु है' नहीं कह सकता, यदि पवित्र आत्मा से न हो।"
→ केवल नए जन्म पाए हुए विश्वासियों को!

2. वरदान देने वाला कौन है?
1 कुरिन्थियों **12:4** – पवित्र आत्मा, प्रभु, परमेश्वर
4 “वरदान तो अलग-अलग हैं, पर आत्मा एक ही है।
5 सेवाएं अलग-अलग हैं, पर प्रभु एक ही है।
6 कार्य भी अलग-अलग हैं, पर उन सब में और सब के द्वारा परमेश्वर एक ही है, जो सब में कार्य करता है।”

इफिसियों **4:7 –** यीशु
"अब हम में से हर एक को मसीह के वरदान के माप के अनुसार अनुग्रह मिला है। 8 इस कारण वह कहता है: 'जब वह ऊपर गया, तो वह बंदियों को अपने साथ ले गया और मनुष्यों को वरदान दिए।'"

---

3. बाइबिल में कौन-कौन से आत्मिक वरदानों का उल्लेख है?

1 कुरिन्थियों **12:7-10**
7 “पर हर एक को आत्मा का प्रगटीकरण लाभ के लिए दिया जाता है।
8 किसी को आत्मा के द्वारा ज्ञान की बात दी जाती है (ज्ञान की बात का अर्थ है परमेश्वर की ओर से सलाह – नीति वचन 13:10 के अनुसार। उदाहरण: नूह को जहाज बनाने की बुद्धि मिली, और मूसा को तंबू अर्थात मिलापवाले तम्बू को बनाने की।)
और किसी को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान का वचन (उदाहरण: किसी के लिए प्रार्थना करते समय आत्मा बताता है कि वह व्यभिचार के लिए पश्चाताप करे। यीशु जानता था कि सामारी स्त्री के कई पति थे।)
9 किसी को उसी आत्मा के द्वारा विश्वास (उदाहरण: विश्वास का वरदान बहुत ही प्रबल विश्वास है। आप परमेश्वर के वचन पर बिना किसी संदेह के विश्वास करते हैं। यह शायद इसलिए है क्योंकि प्रभु ने आपको अद्भुत रीति से

प्रगट किया है। पतरस और पौलुस में यह विशेष विश्वास था, और उन्होंने अनेक चमत्कार किए, यहां तक कि मरे हुओं को जिलाया।)
किसी को उसी आत्मा के द्वारा चंगाई के वरदान (उदाहरण: आप बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा करते हैं। या आप मसीह की तरह चंगाई के अभिषेक में चलते हैं। आप वचन बोलते हैं, आज्ञा देते हैं या छुड़ाते हैं। प्रेरितों के काम 3 में पतरस ने लंगड़े को चंगा किया।)
10 किसी को शक्तिशाली काम (उदाहरण: मृतकों को जिलाना। यीशु ने 3 मृत लोगों को जिलाया, पतरस ने डोरकास उर्फ तबीथा को प्रेरितों के काम 9:36-42 में जिलाया, और पौलुस ने युतुखुस को प्रेरितों के काम 20:7-12 में जिलाया।)
किसी को भविष्यद्वाणी (उदाहरण: पवित्र आत्मा के द्वारा बोलना। प्रकाशितवाक्य 19:10 कहता है कि "यीशु की गवाही ही भविष्यद्वाणी की आत्मा है।"

किसी को आत्माओं की परख (उदाहरण: आप सच्ची और झूठी शिक्षाओं में फर्क कर सकते हैं, जैसे टोने-टोटके की आत्मा या पवित्र आत्मा। प्रेरितों के काम 16 में पौलुस ने एक दासी लड़की को रोका जिसमें ज्योतिष की आत्मा थी। उसने सही बात कही – प्रेरितों 16:17: "ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो तुम्हें उद्धार का मार्ग बता रहे हैं" – पर वह गलत आत्मा से बोल रही थी।)
किसी को अनेकों प्रकार की भाषाएं बोलना (उदाहरण: नीचे "भाषाओं पर शिक्षा" देखें)
और किसी को उन भाषाओं का अर्थ बताना (उदाहरण: आपको प्रकाशन के द्वारा किसी भाषा का अर्थ ज्ञात होता है।)

भाषाओं पर शिक्षा **(TEACHING ON TONGUES)**

भाषाओं में बोलना हर किसी के लिए है**!**

यीशु ने कहा **–** मरकुस **16:17**
"और विश्वास करने वालों के साथ ये चिन्ह होंगे: वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई-नई भाषाएं बोलेंगे..."

पौलुस ने कहा **– 1** कुरिन्थियों **14:5**
"मैं चाहता हूँ कि तुम सब भाषा बोलो, पर यह भी अधिक चाहता हूँ कि तुम भविष्यद्वाणी करो; क्योंकि जो भविष्यद्वाणी करता है, वह उस से बड़ा है जो भाषा बोलता है, जब तक कि वह उसका अर्थ न बताए, ताकि कलीसिया उन्नति पाए।"

भाषाओं में बोलने के लाभ**:**

1. हमें यह नहीं मालूम कि कैसे प्रार्थना करें**,** पर आत्मा जानता है।
रोमियों **8:26-27**
"वैसे ही आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है; क्योंकि जैसा हमें प्रार्थना करना चाहिए, हम नहीं जानते; पर आत्मा आप ही ऐसी आहें भर-भर कर जो व्यक्त नहीं हो सकतीं, हमारे लिये बिनती करता है। और मनों को

जांचने वाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है, क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पवित्र लोगों के लिये बिनती करता है।"

2. आप स्वयं को आत्मिक रूप से मजबूत करते हैं।
यहूदा **1:20**
"पर हे प्रियो, तुम अपने पवित्रतम विश्वास में अपनी उन्नति करते जाओ, और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते रहो।"

1 कुरिन्थियों **14:4**
"जो कोई भाषा में बोलता है, वह अपनी ही उन्नति करता है, पर जो भविष्यद्वाणी करता है वह कलीसिया की उन्नति करता है।"

3. आप दूसरों की उन्नति भी करते हैं।

1 कुरिन्थियों **14:10-19**
"दुनिया में बहुत सी प्रकार की भाषाएं हैं, और उनमें से कोई भी व्यर्थ नहीं है।
11 इसलिए, यदि मैं उस भाषा का अर्थ नहीं जानता, तो जो बोलता है, उसके लिए मैं विदेशी होऊंगा, और जो बोलता है, वह मेरे लिए विदेशी होगा।
12 वैसे ही तुम भी**,** जब कि आत्मिक वरदानों के लालायित हो**,** तो कलीसिया की उन्नति के लिए अधिक से अधिक पाने की चेष्टा करो।
13 इसलिए जो भाषा में बोलता है**,** वह यह प्रार्थना करे कि वह उसका अर्थ भी बता सके।
14 क्योंकि यदि मैं आत्मा में प्रार्थना करता हूँ, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, पर मेरा मन निष्फल रहता है।
15 फिर क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से प्रार्थना करूंगा, और मन से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से भजन गाऊंगा, और मन से भी भजन गाऊंगा।
16 अन्यथा यदि तू आत्मा से आशीष देता है, तो जो अनजान स्थान में बैठा है, वह तेरे धन्यवाद के समय "आमीन" कैसे कहेगा? क्योंकि वह नहीं जानता कि तू क्या कह रहा है।
17 निस्संदेह तू अच्छी रीति से धन्यवाद करता है, पर दूसरा उस से उन्नति नहीं पाता।
18 मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि तुम सब से अधिक भाषा में बोलता हूँ;
19 तौभी कलीसिया में मैं दस हजार शब्दों से अधिक, पाँच ऐसे शब्द बोलना पसंद करूंगा जो मेरे समझ में आएं, ताकि दूसरों को भी सिखा सकूं।"

---

1 कुरिन्थियों **14:26-28**
"अब क्या हो भाइयों? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर किसी के पास एक भजन होता है, एक शिक्षा, एक भाषा**,** एक प्रकाशन**,** एक अर्थ होता है। ये सब बातें कलीसिया की उन्नति के लिए हों।
27 यदि कोई भाषा में बोले, तो दो या तीन से अधिक न हों, और वे भी बारी-बारी से बोलें, और कोई अर्थ बताए।
28 पर यदि कोई अर्थ बताने वाला न हो, तो वह कलीसिया में चुप रहे, और अपने आप से और परमेश्वर से बोले।"

जब कोई भाषा में बोलता है, तो जो "अर्थ" आता है, वह प्रायः एक सन्देश होता है:
1 कुरिन्थियों **12:7-8**
"हर एक को आत्मा का प्रगटीकरण लाभ के लिए दिया जाता है। किसी को आत्मा के द्वारा ज्ञान की बात दी जाती है, और किसी को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान का वचन।"

---

4. जब आप भाषा में बोलते हैं, तो आप परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हैं।
प्रेरितों के काम **10:45-46**
"और जितने खतना किए हुए विश्वासियों में से पतरस के साथ आए थे, वे सब यह देखकर अचंभित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का वरदान उंडेला गया है।
46 क्योंकि उन्होंने उन्हें भाषा में बोलते और परमेश्वर की महिमा करते हुए सुना। तब पतरस ने कहा, 47 "क्या कोई इन लोगों को बपतिस्मा लेने से रोक सकता है?"

1 कुरिन्थियों **14:15**
"तो फिर क्या किया जाए? मैं आत्मा से प्रार्थना करूंगा, और मन से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से स्तुति करूंगा, और मन से भी स्तुति करूंगा।"

5. आप परमेश्वर से बात करते हैं।
1 कुरिन्थियों **14:2**
"क्योंकि जो भाषा में बोलता है, वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है, क्योंकि कोई नहीं समझता; वह आत्मा में रहस्य की बातें करता है।"
("रहस्य परमेश्वर के हैं, प्रकाशन हमारे लिए है। जो खोजता है, वह पाता है।")

---

6. आप परमेश्वर से प्रकाशन प्राप्त करते हैं।
यशायाह **28:9-11**
"वह किसे ज्ञान सिखाएगा? और किसे वचन समझाएगा? क्या उन्हें जो दूध छुड़ाए गए हैं, और जो स्तन से हटाए गए हैं?
10 क्योंकि यह आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां होगा।"

हम भाषा में बोलना कैसे शुरू करते हैं?

1. एकता में आराधना करते समय।
प्रेरितों के काम **2:1-4**
“जब पिन्तेकुस्त का दिन पूरा हुआ, तो वे सब एक चित्त होकर एक स्थान पर इकट्ठे थे।
2 और अचानक आकाश से एक बड़ी आँधी के चलने की सी आवाज़ हुई, और उस से सारा घर जहाँ वे बैठे थे गूंज उठा।
3 और उन्हें आग की सी जीभें दिखाई दीं, जो बंट-बंट कर हर एक पर आ ठहरीं।
4 और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और आत्मा ने उन्हें जो बोलने दिया, उसी के अनुसार अन्य भाषा में बोलने लगे।”

---

2. जब सुसमाचार प्रचार किया जा रहा था।
प्रेरितों के काम **10:44-48**
“जब पतरस ये बातें कह ही रहा था, तो पवित्र आत्मा उन सब पर उतरा जो यह वचन सुन रहे थे।
45 और जितने खतना किए हुए विश्वासियों में से पतरस के साथ आए थे, वे सब यह देखकर अचंभित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का वरदान उंडेला गया है।
46 क्योंकि उन्होंने उन्हें भाषा में बोलते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए सुना।
तब पतरस ने कहा, 47 “क्या कोई इन लोगों को जल से बपतिस्मा लेने से रोक सकता है, जिन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया है, जैसे हम ने किया है?”
48 और उसने आज्ञा दी कि वे यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लें। तब उन्होंने पतरस से विनती की कि वह कुछ दिन उनके साथ रहे।”

3. हाथ रखकर प्रार्थना करना
प्रेरितों के काम **19:5-6**
“जब उन्होंने (ML: इफिसुस के वे विश्वासी जो यीशु के नाम में बपतिस्मा नहीं पाए थे) यह सुना, तो उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया।
6 और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखा, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे अन्य भाषाओं में बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।
7 और उन लोगों की संख्या कुल मिलाकर लगभग बारह थी।”

---

4. आत्मिक वरदान के रूप में **(**मांगो**,** विश्वास करो**,** और ग्रहण करो**)**
1 कुरिन्थियों **14:1-4**
“प्रेम के मार्ग का अनुसरण करो**,** और आत्मा के वरदानों की भी लालसा करो**,** विशेष करके भविष्यद्वाणी करने की।
2 क्योंकि जो भाषा में बोलता है**,** वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है**;** क्योंकि कोई नहीं समझता**,** वह आत्मा में रहस्य की बातें करता है।
3 परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों को सुधारने, समझाने, और शांति देने के लिये बातें करता है।
4 जो भाषा में बोलता है, वह अपने आप को सुधारता है; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया को सुधारता है।
5 मैं चाहता हूँ कि तुम सब भाषा में बोलो, परन्तु और भी यह चाहता हूँ कि तुम भविष्यद्वाणी करो; और जो भविष्यद्वाणी करता है वह उस से बड़ा है जो भाषा में बोलता है, जब तक कि वह उसका अर्थ न बताए, ताकि कलीसिया सुधार पाए।”

लूका **11:9-13**
“9 और मैं तुम से कहता हूँ**,** माँगो तो तुम्हें दिया जाएगा**;** ढूँढ़ो तो तुम पाओगे; खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।
10 क्योंकि जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; और जो ढूँढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।
11 तुम में से ऐसा कौन पिता है, जिसका पुत्र उससे मछली माँगे, और वह मछली के बदले साँप दे?
12 या अंडा माँगे, और वह उसे बिच्छू दे?
13 इसलिये जब तुम बुरे होकर अपने बालकों को अच्छे वरदान देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें पवित्र आत्मा क्यों न देगा जो उससे माँगते हैं**?”**

निष्कर्ष:
हर किसी को पवित्र आत्मा में प्रार्थना करनी चाहिए। यह सबसे शक्तिशाली प्रार्थना है क्योंकि यह परमेश्वर से उत्पन्न होती है और पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर से प्रकाशन लेकर आती है। जब हम पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हैं, आत्मा अलौकिक स्वर्गीय क्षेत्र में ऊपर उठता है जहाँ सब कुछ संभव हो जाता है!

3 जारी**:** बाइबल में कौन-कौन से आत्मिक वरदानों का वर्णन है**?**
रोमियों **12:6-8**
6 और हम में भिन्न**-**भिन्न वरदान हैं, जो हमें दी गई अनुग्रह के अनुसार हैं। यदि भविष्यद्वाणी का वरदान हो, तो अपने विश्वास के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।
7 यदि सेवा करने का, तो सेवा करे; यदि सिखाने का, तो शिक्षा दे;
8 यदि समझाने का, तो समझाए; यदि देने का, तो उदारता से दे; यदि अगुवाई करने का, तो पूरी लगन से करे; यदि दया दिखाने का, तो आनन्द से करे।

रोमियों **12:13** और **1** पतरस **4:9**
हमें अतिथि-सत्कार करने के लिए बुलाया गया है।

1 कुरिन्थियों **12:28**
और परमेश्वर ने कलीसिया में कुछ लोगों को नियुक्त किया है: पहले प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर चमत्कार करने वाले, उसके बाद चंगाई देने वाले वरदान, सहायता करने वाले, प्रशासन करने वाले*, और विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोलने वाले।
*यहाँ "प्रशासन" शब्द का यूनानी अर्थ है "जहाज को दिशा देना।" जिनके पास यह वरदान होता है, वे अक्सर ऐसे अगुवा होते हैं जो कलीसिया को उसके उद्देश्यों की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

प्रेरितों के काम **1:8**
यह पद गवाही देने की सामर्थ्य के बारे में बताता है।

यशायाह **11:2**
यह पद यीशु के विषय में भविष्यवाणी करता है, और यह बताता है कि पवित्र आत्मा यीशु के लिए क्या करता है। और जो आत्मा ने यीशु के लिए किया, वह हमारे लिए भी कर सकता है – यदि हम उसकी खोज करें।
"यहोवा का आत्मा उस पर ठहरेगा—
ज्ञान और समझ का आत्मा,
सलाह और पराक्रम का आत्मा,
यहोवा का ज्ञान और भय मानने का आत्मा—
3 और वह यहोवा के भय में प्रसन्न रहेगा।"

लूका **4:21** में यीशु ने उद्धृत किया कि वह यशायाह **61** की भविष्यवाणी की पूर्ति है:
"प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है,
क्योंकि यहोवा ने मुझे अभिषेक किया है
कि मैं नम्र लोगों को सुसमाचार सुनाऊँ।" — सुसमाचार प्रचारक
"उसने मुझे भेजा है कि मैं खिन्न मन वालों को चंगा करूँ," — चंगाई
"बन्धुओं के लिये छुटकारा, और कैदियों के लिये खुलवा देना प्रचार करूँ," — छुटकारा
"2 यहोवा के अनुग्रह के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के प्रतिशोध के दिन का प्रचार करूँ," — भविष्यद्वक्ता / सुसमाचार प्रचारक
"सब शोक करने वालों को शान्ति दूँ," — चंगाई

3 और सिय्योन में शोक करने वालों के लिए क्या प्रावधान है? — प्रोत्साहन / देना
उनको सौंपा जाए सौंदर्य का मुकुट — चंगाई
राख के बदले,
आनंद का तेल — पुनःस्थापन और अभिषेक
शोक के बदले, — चंगाई अभिषेक
और स्तुति का वस्त्र — उदासी के आत्मा के बदले। — छुटकारा

4. क्या हमारे पास यह निर्णय करने का अधिकार है कि हमें कौन से वरदान मिलें**?**
हाँ, बाइबल हमें उन्हें माँगने और उनकी लालसा करने के लिए कहती है और अपने आप को उपलब्ध कराने के लिए भी!
मत्ती **7:7** — माँगो तो तुम्हें दिया जाएगा!
1 कुरिन्थियों **14:1** — प्रेम के मार्ग पर चलो और आत्मा के वरदानों की लालसा करो, विशेष रूप से भविष्यद्वाणी की।
यशायाह **6:8** — "मैं किसे भेजूं? और हमारे लिए कौन जाएगा?" तब मैंने कहा, "मैं यहां हूं, मुझे भेज!"

5. प्रत्येक वरदान महत्वपूर्ण है।
1 कुरिन्थियों **12:21-26**
21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, “मुझे तेरी आवश्यकता नहीं है!” और सिर पाँवों से नहीं कह सकता, “मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है!”
22 इसके विपरीत, वे अंग जो शरीर में दुर्बल माने जाते हैं, वे और भी अधिक आवश्यक हैं,
23 और जिन्हें हम कम सम्मानजनक मानते हैं, उन्हें विशेष आदर दिया जाता है। और जो अंग दिखाने योग्य नहीं होते, उन्हें विशेष मर्यादा के साथ ढका जाता है,
24 जबकि हमारे दिखने योग्य अंगों को किसी विशेष उपचार की आवश्यकता नहीं होती।
परन्तु परमेश्वर ने शरीर को इस प्रकार बनाया कि जिन अंगों को आदर की आवश्यकता थी, उन्हें अधिक आदर दिया,
25 ताकि शरीर में विभाजन न हो, परंतु सब अंग एक-दूसरे की बराबर चिन्ता करें।
26 यदि एक अंग दुखी होता है, तो सब अंग उसके साथ दुखी होते हैं; और यदि एक अंग का आदर होता है, तो सब अंग उसके साथ आनन्दित होते हैं।

6. वरदान किसलिए हैं**?**
रोमियों **1:12** — कि हम एक-दूसरे के विश्वास के द्वारा एक-दूसरे को उत्साहित करें।
रोमियों **12:6-8;** इफिसियों **4:12 —** ये शरीर (कलीसिया) के लाभ के लिए हैं:
हम ज्ञान, चंगाई, समझ, शिक्षा, सामर्थ्य आदि प्राप्त करते हैं।

7. परमेश्वर के दास भी शरीर के लिए एक वरदान हैं।
इफिसियों **4:11**
11 और उसी ने कुछ को प्रेरित, कुछ को भविष्यद्वक्ता, कुछ को सुसमाचार सुनानेवाला, कुछ को पासबान और शिक्षक नियुक्त किया।

एक सेवक का उद्देश्य क्या है**?**
इफिसियों **4:12-16**
12 कि वे पवित्र लोगों को सेवा के काम के लिए तैयार करें, जिससे मसीह की देह की उन्नति हो,
13 जब तक कि हम सब विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं और एक परिपक्व मनुष्य बन जाएं**,** जो मसीह की पूर्णता के स्तर तक पहुंच चुका हो **(**अभिषेक**)**।
14 तब हम अब और बालक न रहेंगे, जो हर एक उपदेश की आंधी से इधर-उधर डोलते और मनुष्यों की चालाकियों और कपटपूर्ण युक्तियों से भटक जाते हैं।
15 परन्तु प्रेम में सत्य बोलते हुए, हम सब बातों में मसीह की ओर**,** जो सिर है**,** बढ़ते जाएं।

16 उसी से सारा शरीर एक साथ जुड़ा और एक साथ बंधा रहता है, और हर जोड़ की सहायता से कार्य करता है। जब हर एक अंग अपना कार्य ठीक से करता है, तब देह प्रेम में बढ़ती और स्वयं को बनाती है।

परिपक्वता के कुछ ठोस परिणाम क्या हैं?
हम इफिसियों **4** में पढ़ते हैं: मसीह की पूर्णता के स्तर तक पहुँचना (अभिषिक्त)।
यशायाह **61:3** — उन्हें धर्म के बांज वृक्ष कहा जाएगा, यहोवा का रोपण, उसकी महिमा प्रकट करने के लिए।
मरकुस **16:17-18**
17 और ये चिन्ह उन पर प्रगट होंगे जो विश्वास करेंगे: मेरे नाम से वे दुष्टात्माओं को निकालेंगे; वे नई भाषाएं बोलेंगे;
18 वे सांपों को उठाएंगे; और यदि वे कोई घातक वस्तु पी लें, तो वह उन्हें हानि न पहुंचाएगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे होंगे।

गलातियों **5:22-23** — पर आत्मा का फल है: प्रेम, आनन्द, शान्ति, सहनशीलता, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम। ऐसे गुणों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं है।

8. हमें सेवा कैसे करनी चाहिए? हमें अपने वरदानों का उपयोग कैसे करना चाहिए?
फिलिप्पियों **2:3-4** — स्वार्थ या घमंड से कुछ न करो, पर नम्रता से एक-दूसरे को अपने से श्रेष्ठ समझो। तुम में से हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चेष्टा करे।

कुलुस्सियों **3:17** — और वचन या काम जो कुछ भी करो, सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।

रोमियों **12:10** — प्रेम में एक दूसरे से प्रीति रखो। एक दूसरे को आदर देने में अग्रणी बनो।
11 — उत्साह में कभी ढीले न पड़ो, आत्मा में उबलते रहो, प्रभु की सेवा करते रहो।

कुलुस्सियों **3:23-24** — जो कुछ भी करो, मन लगाकर करो, जैसे कि प्रभु के लिए कर रहे हो, न कि मनुष्यों के लिए,
क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें प्रभु की ओर से विरासत में पुरस्कार मिलेगा।

1 कुरिन्थियों **13** — यदि हमारे पास प्रेम नहीं है, तो हम कुछ भी नहीं हैं।
यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाओं में बोलूं, पर प्रेम न हो, तो मैं केवल एक झंकारता हुआ पीतल या एक गूंजती झांझ हूं।
2 — यदि मुझे भविष्यवाणी करने का वरदान हो, और मैं सब रहस्यों और सारे ज्ञान को जानता होऊं, और ऐसा विश्वास रखूं कि पर्वतों को हटा सकूं, पर प्रेम न हो, तो मैं कुछ भी नहीं हूं।
3 — यदि मैं अपनी सारी सम्पत्ति गरीबों को दे दूं, और अपना शरीर जलाये जाने के लिए सौंप दूं, पर प्रेम न हो, तो उससे मुझे कुछ लाभ नहीं।
4 — प्रेम धीरजवंत है, प्रेम दयालु है। यह न ईर्ष्या करता है, न डींग मारता है, न घमंड करता है।
5 — यह अभद्रता नहीं करता, यह अपनी भलाई नहीं चाहता, यह चिढ़ता नहीं, यह बुराई का लेखा नहीं रखता।
6 — यह अधर्म से आनंदित नहीं होता, पर सत्य से आनंदित होता है।
7 — यह सब कुछ सहता है, सब कुछ विश्वास करता है, सब कुछ आशा करता है, सब कुछ सहन करता है।

8 — प्रेम कभी निष्फल नहीं होता।

9. आत्मिक वरदानों को प्रदान किया जा सकता है।
रोमियों **1:11-12 (**पौलुस बोलता है**)**
11 — क्योंकि मैं तुम्हें देखने की लालसा रखता हूं, कि मैं तुम्हें कुछ आत्मिक वरदान दूं, जिससे तुम स्थिर हो जाओ।
12 — अर्थात मैं और तुम, दोनों के विश्वास के द्वारा एक साथ उत्साहित हों।

10. हमें अपने वरदानों का उपयोग करने की आज्ञा दी गई है।
1 पतरस **4:10-11**
10 — जैसा कि प्रत्येक व्यक्ति को वरदान मिला है, वैसे ही एक-दूसरे की सेवा में उस वरदान का उपयोग करें, जैसे कि परमेश्वर की अनेक प्रकार की अनुग्रह के अच्छे भण्डारी।
11 — यदि कोई बोले, तो परमेश्वर के वचन के अनुसार बोले; यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति के अनुसार करे, जो परमेश्वर देता है; जिससे परमेश्वर सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा महिमा पाए; उसी की महिमा और प्रभुता युगानुयुग बनी रहे। आमीन।

मत्ती **25:14-30** टैलेंट्स की दृष्टांत यह दिखाती है कि यदि हम अपने वरदान का उपयोग नहीं करते तो क्या होता है।

14 — “क्योंकि यह एक ऐसे मनुष्य की तरह होगा जो यात्रा पर गया, जिसने अपने सेवकों को बुलाया और उन्हें अपनी संपत्ति सौंप दी।
15 — किसी को उसने पाँच टैलेंट्स दिए, किसी को दो, और किसी को एक, प्रत्येक की क्षमता के अनुसार। फिर वह चला गया।
16 — जिसने पाँच टैलेंट्स प्राप्त किए थे, तुरंत गया और उन टैलेंट्स से व्यापार किया, और पाँच टैलेंट्स और कमाए।
17 — उसी प्रकार जिसने दो टैलेंट्स पाए थे, उसने भी दो टैलेंट्स और कमाए।
18 — लेकिन जिसने एक टैलेंट पाया था, वह गया और जमीन खोदी और अपने स्वामी का पैसा छिपा दिया।
19 — अब बहुत समय बाद, उन सेवकों का स्वामी आया और उनसे हिसाब मांगा।
20 — जिसने पाँच टैलेंट्स पाए थे, वह आगे आया और पाँच टैलेंट्स और लाया, कहता है, ‘स्वामी, तूने मुझे पाँच टैलेंट्स दिए थे; देखो, मैंने पाँच और टैलेंट्स कमाए।’
21 — उसका स्वामी उससे बोला, ‘शाबाश, अच्छे और विश्वासी सेवक! तू थोड़े पर विश्वासी था, इसलिए मैं तुझे बहुत पर रखूंगा। अपने स्वामी की खुशी में प्रवेश कर।’
22 — उसी तरह जिसने दो टैलेंट्स पाए थे, वह भी आगे आया और कहता है, ‘स्वामी, तूने मुझे दो टैलेंट्स दिए थे; देखो, मैंने दो और टैलेंट्स कमाए।’
23 — उसका स्वामी उससे बोला, ‘शाबाश, अच्छे और विश्वासी सेवक! तू थोड़े पर विश्वासी था, इसलिए मैं तुझे बहुत पर रखूंगा। अपने स्वामी की खुशी में प्रवेश कर।’
24 — जिसने एक टैलेंट पाया था, वह भी आगे आया और बोला, ‘स्वामी, मैं जानता था कि तू कठोर मनुष्य है, जो बिना बोए कटाई करता है और बिना बुवाई के इकट्ठा करता है,

25 — इसलिए मैं डरा और गया और तेरा टैलेंट जमीन में छिपा दिया। देख, तेरा धन है।'
26 — लेकिन उसका स्वामी उससे बोला, 'तू दुष्ट और सुस्त सेवक! तू जानता था कि मैं बिना बोए कटाई करता हूं और बिना बुवाई के इकट्ठा करता हूं?
27 — तब तुझे मेरे पैसे बैंकों में लगाना चाहिए था, और मेरे आने पर मुझे ब्याज सहित मेरा धन वापस मिलना चाहिए था।
28 — इसलिए टैलेंट उससे ले लो और उसे दो जो दस टैलेंट्स पाए हैं दे दो।
29 — क्योंकि जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा, और वह अधिक समृद्ध होगा। लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है, उससे भी जो कुछ है ले लिया जाएगा।
30 — और उस निकम्मे सेवक को बाहरी अंधकार में फेंक दो। वहाँ रोना और दांत पीसना होगा।'

11. अपने आत्मिक वरदान की खोज।
सेवा करने वाले उन छात्रों के साथ प्रार्थना करें जो अपने वरदानों को नहीं जानते और पवित्र आत्मा अपने आप को उन पर प्रकट करेगा। आमीन